यज्ञ की बहुमूल्य धरोहर

दादी ईशु जी



प्रकाशकः प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय,
अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय : पाण्डव भवन, आबू पर्वत - 307501

प्रतियाँः 5000
प्रथम संस्करणः 2023

मुद्रणः ओम् शान्ति प्रिंटिंग प्रेस,
ओम् शान्ति नगर, भारजा,
पिण्डवाड़ा सिरोही
राजस्थान

पुस्तक मिलने का पताः साहित्य विभाग
पाण्डव भवन, माउंट आबू- 307501
ज्ञानसरोवर, माउंट आबू - 307501
शान्तिवन, आबू रोड - 307510
राजस्थान, भारत

कॉपी राइटः © प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय,
पाण्डव भवन, माउंट आबू- 307501 राजस्थान, भारत।

यज्ञ की बहुमूल्य धरोहर

दादी ईशु जी

ब्रह्माकुमारी, माउंट आबू

दो शब्द

यह छोटी सी पुस्तक रत्नागर बाप, ज्ञान सागर की गुप्त रत्न चित्रगुप्त दादी ईशु जी के यज्ञ में अपने अभूतपूर्व पार्ट को पूरा करने के उपरांत उनके प्रति ब्रह्मावत्सों के दिल के उदगार स्वरूप समर्पित हैं । इस पुस्तक में दादी ईशु जी के कुछ गुण व विशेषताएं काव्यात्मक रूप से शब्दबद्ध है जो उन्होंने बापदादा द्वारा अपनी संपूर्ण बनने की आध्यात्मिक यात्रा में आत्मसात किए। यह पुस्तक उनके अथक पुरुषार्थ वा अलौकिक गुणों एवं विशेषताओं द्वारा प्राप्त फरिश्ता स्थिति पर प्रकाश डालती है, जिससे वे सभी ब्रह्मावत्सों के लिए प्रेरणा पुंज बनीं । उनकी अलौकिक आभा, एक रस स्थिति, सहज सरल स्वभाव व स्वयं को कभी प्रत्यक्ष ना करने की उनकी भावना, सभी को सहज भाव से आगे बढ़ने का उमंग प्रदान करती है । पुस्तक में संकलित जीवित गुणों द्वारा हम सभी अपने जीवन में उमंग उत्साह को भरते हुए संपूर्णता का मार्ग प्रशस्त कर पाएं व सुंदर स्वर्ग का सपना साकार करें, इस लक्ष्य से यह पुस्तक प्रस्तुत है ।

जीवन परिचय

आदरणीय श्रद्धेय दादी ईशु जी का जन्म सिंध हैदराबाद में 1 मई, वर्ष 1928 को हुआ था। पिता 'दयालदास थडानी' एवं माता 'कमला' ने उन्हें नाम दिया 'ईश्वरीय', तथा सदा शांतचित्त, धीर, गंभीर स्वभाव वाली दादी ईशु जी को शिव पिता ने नाम दिया पूर्ण



शांतामणि। दादी जी ने ब्रह्मा बाबा में एक अलौकिक,दिव्य पुरुष का साक्षात्कार किया था। यज्ञ की शुरुआत में दादी जी अपनी 1 वर्ष छोटी लच्छू दादी, चार भाइयों वा पूरे परिवार सहित यज्ञ में समर्पित हो गई। 7 वर्ष की दादी जी ने बाबा के बोर्डिंग स्कूल में हिंदी, सिंधी,अंग्रेजी भाषा, हिसाब किताब की पढ़ाई के साथ - साथ ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करना भी शुरू किया। सच्चाई, ईमानदारी, आज्ञाकारिता व वफादारी के संस्कारों की धनी दादी जी को बाबा ने यज्ञ की भंडारी संभालने की जिम्मेदारी दी। अपने अंतिम क्षणों तक वे आर्थिक कारोबार संभालने के निमित्त रही।वह इसमें प्रवीण व एक्यूरेट थीं। इसके अलावा दादी जी ने परमात्म टचिंग को कैच कर 'सांकेतिक लिपि' की रचना की जिससे वे शिव पिता के ब्रह्मा मुख द्वारा उच्चारण किए गए गीता ज्ञान को शॉर्ट में बहुत सधे हाथों से कागज पर लिख लेती थीं। बाबा की मुरली की स्पीड तेज होती थी, फिर भी दादी जी बाबा का हल्का सा इशारा भी कैच करके सांकेतिक भाषा में पूरी मुरली लिख लेती थीं। यज्ञ के बेगरी पार्ट में बाबा ने सभी की निश्चय की भी परीक्षा ली। साथ ही साकार बाबा ने दादी जी को एक घड़ी दी थी, जो नब्ज़ के द्वारा चलती थी, जिसे दादी जी ने अंतिम समय

तक बहुत प्यार से अपने पास रखा। गुणमूर्त दादी जी सुप्रीम टीचर की बेस्ट स्टूडेंट, पवित्र और ज्ञानयुक्त बुद्धि वाली, सर्व की सच्ची हितैषी, ड्रामा के राज़ को जानने वाली, सदा संतुष्ट, अथक सेवाधारी, महान कर्मयोगी, बीती को बीती करने वाली थी। 18 जनवरी 1969 को ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा ने दादी प्रकाशमणि जी को निर्देश दिया कि ईशु बच्ची को सदा सेवा में साथ रखना, क्योंकि बाबा ने बच्ची को यज्ञ का सारा कारोबार समझा रखा है। उसके बाद दादी प्रकाशमणि जी ने दादी ईशु जी को देश-विदेश की सभी सेवाओं में सदा अपने अंग संग रखा। 2005 तक दादी पांडव भवन में सेवाएं देती रहीं। फिर शांतिवन में दादी जी ने अंत तक यज्ञ का सम्पूर्ण कारोबार कोषाध्यक्ष के रूप में संभाला। अपने ज्ञान योग, निस्वार्थ प्रेम के रत्नों से दादी जी यज्ञवत्सों को हंसाती, बहलाती और उनकी झोली वरदानों से भरती रहती थीं। 6 मई 2021 को दादी जी अपना पुराना चोला छोड़ फरिश्ता चोला धारण किया और बाबा के पास चली गई। आज भी उनकी सूक्ष्म उपस्थिति यज्ञ और यज्ञवत्सों की पालना कर रही है। वे सदा सूक्ष्म रूप से हम सब के साथ हैं ।



बाबा मम्मा की आप थी
मनी प्लांट,
पैसे की लेनदेन पर रखती थी
आप पूरा ध्यान ।



आज्ञाकारिता, ईमानदारी,
वफादारी की थीं आप मिसाल,
उदारता, तपस्या और पालना में भी
थीं आप बेमिसाल।



आप से सीखा हमने
कैसा हो मीठा स्वभाव,
जीवन में ना हो कभी
गुणों व शक्तियों का अभाव ।



ब्रह्मा बाबा ने स्वयं आपको
दी थी हाथ की घड़ी,
समय के एक-एक सेकंड को
सफल करते आप बन गईं सबसे बड़ी ।



यज्ञ का संभाला आपने
सारा कारोबार,
बाबा का राइट हैंड बन
खुशियों से भर दिया सबका संसार ।



हिसाब किताब में आप थीं
सदा एक्यूरेट,
बाबा की लिखावट को भी समझने में
आप थीं परफेक्ट ।



रत्नागर के रत्नों का
किया सदा व्यापार,
हम सबके जीवन को खुशियों से
भर दिया अपार ।



ज्ञान सागर के वचनों को आत्मसात कर
आपने रच दी नई भाषा, अगर ना बनाते
आप सांकेतिक लिपि, तो कैसे पूरी होती ज्ञान
रत्नों को पाने की हमारी अभिलाषा ।



ब्रह्मा बाप को फॉलो करने में
आप थीं नंबर वन,
निश्चल प्रेम, करुणा,
दया की प्रतिमां था आपका मन ।



प्रभु मिलन की खुशियों में
आप थे सदा नाचते गाते,
संपूर्ण यज्ञ के साथ
आपके थे रूहानी नाते ।



बाबा की दी हुई घड़ी
आप सबको दिखाती,
समय का प्रबंधन कैसे करते हैं,
यह सबको सिखलाती ।



गंभीरता और अंतर्मुखता की थी
आप संपूर्ण मूरत,
दिव्य गुणों से सजी सजाई थी
आपकी जीती जागती सूरत ।



सदा अथक सेवाधारी,
प्राणों से प्यारी ईशु दादी हमारी,
आपकी सीरत से दिखती हमें,
ईश्वरीय खुमारी ।



चतुर सुजान बाबा ने पहले ही
बता दिया था यज्ञ का समस्त कारोबार,
भोलानाथ स्वयं भर कर गया था
आपमें गुणों व शक्तियों का अंबार ।



मधुबन पांडव भवन में जब
आप संभालती थी यज्ञ की भंडारी,
सर्व ब्राह्मणों और भगवान की भी
दुआएं कर लेती थी इकट्ठी सारी ।



स्वयंभू नीलकंठ ने जो
समझाई थी परिभाषा,
आपने सर्व को समझाई
ट्रस्टी होने की वही भाषा ।



सब कुछ जानते हुए भी
सागर समान समाने की थी आप में कला,
क्योंकि आप समझती थीं
सन्तुष्ट करने में ही है सबका भला ।



बाबा और बच्चों का वह पत्र मिलन मेला, अद्भुत
था वह खेल निराला, बाबा लिखें पत्र सिंधी में
आप लिखें उसे हिंदी में, दिन रात अथक सेवा को
कर आप समा जाते शिव बिंदी में।



दादी माँ वरदायिनी,
देती सबको प्यार,
वंचित कोई रहा नहीं,
सबके साधे काज ।



इतनी मिठास, इतना विश्वास
इतना निःस्वार्थ भाव का प्यार,
परमात्मा की श्रीमत पर आप
सदा ही रहती थी मर मिटने को तैयार ।



दादी ईशु जी का पार्ट
सदा ही गुप्त रहा,
परमात्म हृदय में समा कर आपने
कभी किसी से कुछ ना कहा ।



स्थूल में भी अंग संग,
रहती सदा बाबा के आसपास,
कारोबार को संभालने में भी
आप बाबा की थी बेहद खास ।



दाएं से बाएं को भी पता ना चले,
संपूर्ण बैठती है आप पर यह मिसाल अंतर्मुखता,
वफादारी, निमित्त, निर्माण,
बनकर आपने कर दिया यह कमाल ।



विश्व के इस नाटक पर
आपने जो कर दिया मंचित,
सर्व प्रति यही आस थी आपकी बाबा के
प्रेम से कोई रह ना जाए वंचित ।



कभी भी बाबा को ना थी भूलती,
पूछने पर बताती थी बस एक राज,
कभी भी वो अपनों से दूर होता है क्या,
वह तो है हमेशा मेरा हमराज़ ।



इस यज्ञ में वफादारी और निमित्तपन की
आप थी शान,
दिल में बाबा का सदा प्यार और चेहरे पर
थी निश्छल मुस्कान ।



जब भी किसी से मिलती तो
मिलती बाहें पसार,
प्यारा बाबा मीठा बाबा हमेशा कहती,
सदा ही रहती मिलनसार ।



रिंचक मात्र भी ना था
आप में अभिमान,
यज्ञ की भंडारी संभालते भी
आप थीं सदा निर्मान ।



सदा यही कहती मैं तो
बाबा की छोटी बच्ची हूँ,
दिल की सदा ही सच्ची हूँ ।



बिना बाबा को भोग स्वीकारे,
स्वयं कभी नहीं स्वीकारतीं,
बाबा की मधुबन बगिया को सदा ही
अपने हाथों से सवांरती ।



अपनी तकलीफ का वर्णन
कभी किसी से नहीं करती,
हमने देखा आप बाबा से हमेशा
सर्वशक्तियां भरतीं ।

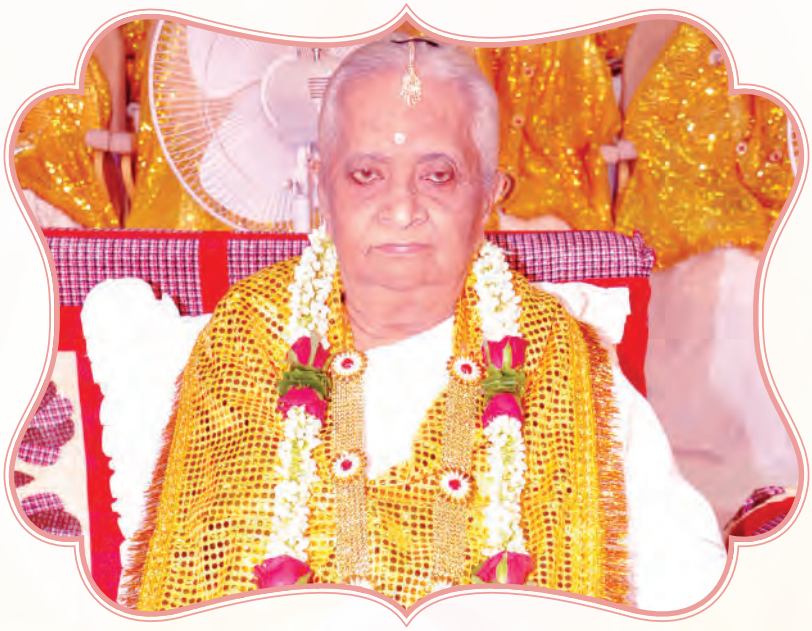

स्वयं के समय के साथ-साथ
आपने रखा दूसरों के समय का भी ध्यान,
हे मां संतोषी कैसे करें आपकी
तपस्या का बखान ।



आपने करके दिखाया
तपस्या से कमाल,
शरीर की तकलीफों के चलते भी ना
आने दिया मन में कोई मलाल।



सेवा में सदा रहीं आप आज्ञाकारी,
स्व स्थिति में आप रहीं सदा निराकारी,
हमको भी आपनें यही समझाया,
हर कर्म में रहो सदा निरहंकारी ।



हमने सदा पाया आपको
बाबा की यादों में मगन,
आपने बाबा को बना लिया था
अपना साजन ।



एकनामी और इकोनॉमी की
आप थीं अवतार,
सर्व को संतुष्ट करती और रहती मगन
तपस्या में लगातार ।



सदा हर्षितमुख और गहरे
राजों को रखती थीं संभाल,
अपने विचारों में आपने कभी नहीं
मचने दिया धमाल ।

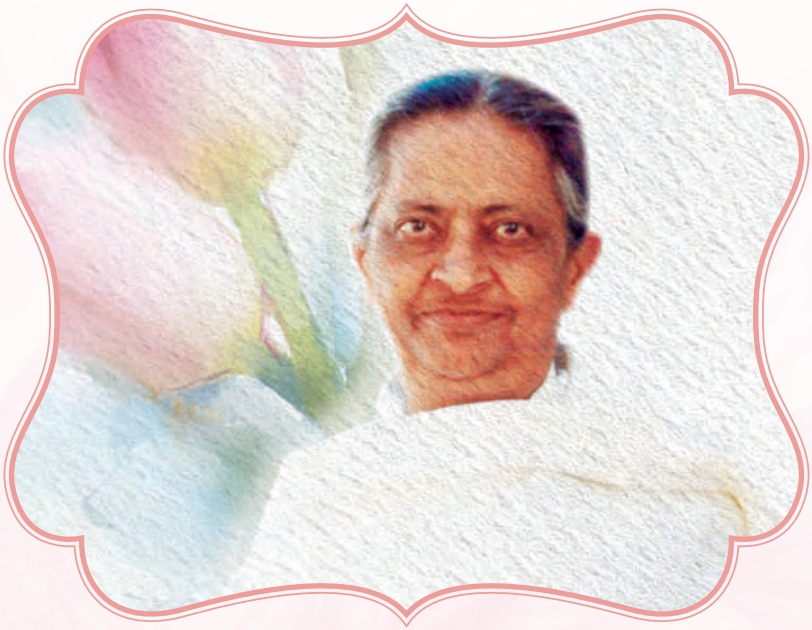

परख शक्ति और सहनशक्ति
आप में थी कमाल,
जो भी आता सदा लगाती उसे
आप शक्तियों का गुलाल ।



फूल अगर छुपा भी दे तो भी
खुशबू आती है,
आपकी याद से आज भी आत्माओं में
शक्ति भर जाती है ।



समाने में थीं आप अव्वल नंबर
बहलाने में भी थीं आप अव्वल नंबर,
आपके तो क्या कहने दादी जी जीवन जीने की
कला सिखलाने में भी आप थीं अव्वल नंबर ।



बाबा ने कहा आपको पूर्णशांता,
तो शांति की आप बन गई प्रतीक,
हमने प्रत्यक्ष देखा किस तरह बन गईं आप,
सर्वगुणों और कलाओं में अतीक ।



आपका सर्व के साथ था
मीठा व्यवहार,
किसी का व्यक्तित्व चाहे कैसा भी हो,
आपका सदा ही रहा उन पर रूहानी प्यार ।



जब भी यज्ञ में कुछ आता
बिना एक्नॉलेजमेंट के ना रह पाता,
सबका आपसे था कुछ गहरा नाता,
क्योंकि सबको आपका व्यवहार बहुत था भाता ।



आप से सीखा हमने हर परिस्थिति में
नियमों का पालन करना,
परिस्थिति कैसी भी आए पास विद
ऑनर होकर रहना ।



आप एक नक्षत्र हैं,
हमारे ऊपर आपकी
दुआओं का छत्र हैं ।



आपकी नेचुरल नेचर में थे
इकोनामी के गहरे संस्कार,
भोलानाथ बाप ही सदा
रहा आपका संसार ।



यज्ञ के आर्थिक पेपर को
मैनेज करने में भी आप रही माहिर,
समस्त गुणों से भरपूर होते हुए भी
आपने ना होने दिया स्वयं को जगजाहिर ।



आपका अपना कोई शौक नहीं,
कोई चाहना नहीं, आपने सिखाया कभी
कड़वे बोल कहना नहीं, सेवा को इशारे से
करना, कभी कहलवाना नहीं ।



बना दिया हर पल खूबसूरत
और जिंदगी अनूठी,
मेरी उंगली में जब आपने
पहना दी बाबा के नाम की अंगूठी ।



सर्व के प्रति सदा ही रहा निश्छल,
निस्वार्थ भाव, स्वयं के प्रति
आपने रखा निमित्त,
निर्माण और तटस्थ भाव ।



दादी जी आप थीं हमारे
यज्ञ का रियल गोल्ड,
सबको आपने सिखाया कैसे होते हैं
समय प्रमाण मोल्ड ।



हे शिव शक्ति, सर्वगुणों,
सर्व शक्तियों से सदा सुसज्जित,
ब्रह्मावत्सों के दिलों में
आप रहोगी सदा सज्जित ।



हमें अपनी आत्मा को पवित्र इनोसेंट
और निर्दोष है बनाना,
यही समय है जिसके अंत में
अब हमें घर है जाना ।



हे मां मुझे भी अपने
आंचल में छुपा लो,
हे प्रभु की प्यारी गोपी मुझे भी
आप समान बना लो ।



आध्यात्मिकता का आप
जीता जागता स्वरूप थीं,
एकोनॉमी की अवतार,
सदा उदाहरण रूप थीं ।



स्वमान की सीट पर
रहती थीं आप सदा सेट,
इसलिए कभी नहीं हुई
दादी जी आप अपसेट ।



आपके चरित्र में अहम् की
कोई गुंजाइश न थी,
परमात्म साथ के बाद आपकी
कभी कोई फरमाइश न थी ।



साफ दिल वाली
हे वरदानी मूरत,
आज भी वरदान देती है
आपकी रूहानी सूरत ।



बालक और मालिक पन का
सदा ही रखा संतुलन,
परिस्थितियों का परखशक्ति के आधार पर
सदा ही करती थी श्रेष्ठता से उन्मूलन।



यज्ञ का सम्मान थीं आप,
हम सबकी शान थीं आप,
इस ईश्वरीय परिवार की एकोनॉमी की
पहचान थीं आप ।



हमारे दिल के हर पन्ने पर
आपके तपस्या की है झलक,
अब हमें बाबा सा बनना है
बस यही है ललक ।



कम खर्च बाला नशीन थीं
आप हे पुण्य आत्मा,
हम सबके दिलों पर राज करने वाली थीं
आप महान आत्मा ।



स्थूल शरीर में रहते
आप थीं सदा न्यारी,
हम सबको सदा स्मरण रहेंगी
प्यारी दादी हमारी ।



परमात्म टचिंग को दिया
आपने नया आकार,
सांकेतिक लिपि की
आप है रचनाकार ।



सात वर्ष की आयु से
किया आपने पदार्पण,
आपके दिव्य गुणों से महक उठा
यज्ञ का आंग़न ।



सबको खूब हंसाती दादी,
मन के आंगन में
फूल खिलाती दादी ।



आप की महिमा का हम
क्या करें गुणगान,
गुप्त रत्न रहकर आप ने
बढ़ाई यज्ञ की शान ।



आप यज्ञ में थी ईमानदारी,
एकोनॉमी की मिसाल,
आपने हमेशा ट्रस्टी होकर
यज्ञ की करी संभाल ।



बाबा करते थे आप पर
संपूर्ण विश्वास,
यज्ञ की कोषाध्यक्ष बनाकर आपको
बना दिया नव विश्व का आधार ।

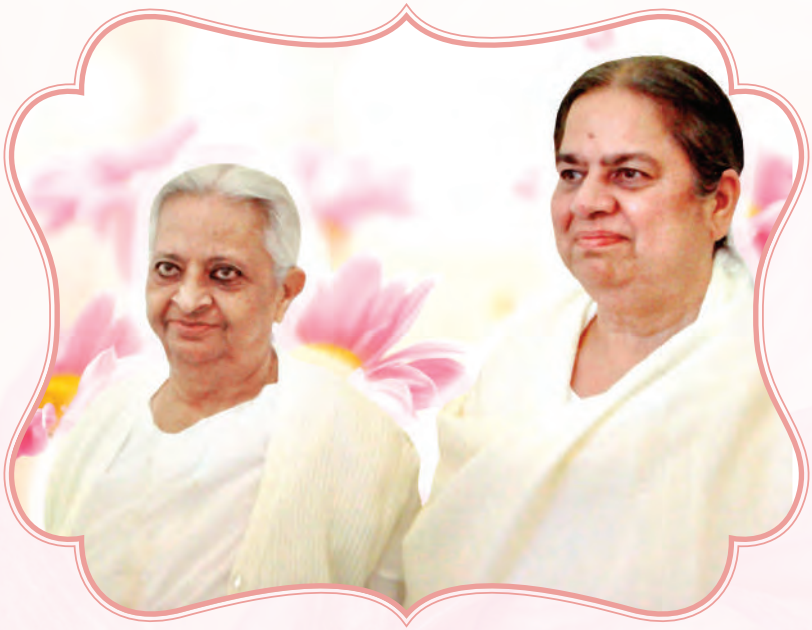

इतिहास के पन्नों पर
रची गई एक अद्भुत गाथा,
दादी ईशु जी ईश्वर का
खजांची बन बनाती थी बहीखाता ।



ये पूजनीय सभी दादियाँ
इस ईश्वरीय यज्ञ की हैं शान,
हमारी प्यारी दादी ईशु जी हैं
चित्रगुप्त और दधिचि ऋषि समान ।



हर परिस्थिति में स्वयं को
ऐसे मोल्ड किया जो रियल गोल्ड बन गईं,
ब्रहाा बाबा का राइट हैंड बनीं तो
यज्ञ की महालक्ष्मी भी कहलाईं ।



आपकी अपार महिमा का
भला हम कैसे करें गुणगान,
गुप्त रूप में रहकर आपने हमेशा
बढ़ाई यज्ञ की शान ।



वफादार, फरमानबरदार बन विघ्नों को
करती थीं सबसे दूर,
निर्मल, निश्छल, निःस्वार्थ भाव से
दादी ईशु जी थीं भरपूर ।



पुण्य आभा वाली थीं बापदादा
के नयनों की नूर,
सर्व को बेदाग बनाने वाली
दादी थीं सच्ची कोहिनूर।



ज्ञान, योग का बल बढ़ाने और
देती थीं खुशी में रहने की समझानी,
इसलिए हम आज भी याद करते हैं
दादी जी की दिव्य कहानी ।



ईश्वर की नज़र थी उन पर
तभी तो लौकिक नाम भी 'ईश्वरीय' पाईं,
सबकी बातों को मन में समा लिया
और बाप की राइट हैंड कहलाईं ।



कोई ऐसा गीत न है न कभी बनेगा,
जिसमें आपकी मधुरता समाए,
दुनिया में कोई ऐसा ग्रंथ रचेगा भी नहीं,
जिसमें आपकी महानता बयां की जाए ।



सात वर्ष की आयु में
शिव शमा पर हुईं आप बलिहार,
स्वयं परमात्मा ने सौंपा पूरे
यज्ञ के खज़ानों का कारोबार ।



हर आत्मा के प्रति आपके
मन में रहती थी सहानुभूति,
जो भी आए आपके सम्मुख करे
परमात्म प्रेम की अनुभूति ।



जब से आप ब्रहा बाबा के
अंग-संग सेवा करने आईं,
चित्रगुप्त बन पत्र लेखन में
आपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।



जीवन में कभी पोस्ट-पोज़िशन का
नहीं रहा आपको भान,
स्वयं भगवान भी हुए इस विशेषता को
देख आप पर दिल से कुर्बान ।



दादी जी इस दुनिया से
सदा ही रहीं उपराम,
इस आध्यात्मिक जगत की
आप बनी विभूति महान ।



सदा उमंग- उत्साह और
खुशी में नाचती रहतीं,
एक बाबा शब्द में ही
उनकी पूरी दुनिया बसती ।



आध्यात्मिक साधना की
पराकाष्ठा को आप यूं छू गईं,
आपको देखकर लाखों लोगों की
आंखें मंत्रमुग्ध हो गई ।



विधि के विधान ने
रचा ऐसा अद्भुत इतिहास,
निर्मानता की धनी दादी को
बनाया यज्ञ का बेहद खास ।

दादी जी के संदेश

- दादी जी का कहना था ये एक रूपया नहीं यज्ञ की अमानत है, इसलिए इसे कभी व्यर्थ नहीं गवांना ।
- दादी जी कहतीं- बाबा ने हमें बोला है, सदा खुश रहो, कभी भी मुरझाना नहीं है ।
- हमारे जैसा खुशनसीब दुनिया में कोई नहीं होगा, बाबा मिला सबकुछ मिला ।
- कितने धनी हैं हम लोग, क्योंकि जिन भगवान को सारी दुनिया ढूँढ़ती है, वो हमारे नसीब में है ।
- चाहे राजाई हो या बेगरी पार्ट, बाबा की याद में सदा निश्चिंत और खुश रहना है ।
- जीवन में कभी सवाल पैदा न हो कि क्या होगा, कैसे होगा? हर परिस्थिति में ये संकल्प रहें कि बाबा मेरे साथ है, तो विजय हमारी निश्चित है ।
- भगवान हमारे साथ हो, तो जीवन में कभी कोई कमी महसूस नहीं होगी ।
- सेवा कार्यभार कितना भी हो लेकिन अपने बचपन को मत खोना, हमेशा खिलखिलाते रहना है ।

- हमेशा खबरदार रहना है कि अपने पद- पोज़िशन का कभी भी अहंकार न आए ।
- अपनी ज़िम्मेदारियों को बखूबी निभाना है, इसके लिए भले ही नींद ही क्यों न फिट जाए ।
- कोई भी आपके पास आए, उसे स्नेह ओर खुशी की खुराक ज़रूर खिलानी है ।
- एक सच्ची मीरा की तरह भगवान का दिल से गुणगान करते रहें, चाहे कुछ भी हो जाए कभी निश्चय को नहीं खोना है ।
- सदा श्रीमत का दामन थाम कर रखना है, अपनी मनमत या परमत पर नहीं चलना है ।
- निमित्त जो भी सेवा दें उसको निरसंकल्प होकर करना है, हमेशा आज्ञाकारी, वफादार, फरमानबरदार होकर रहना है ।
- सहनशीलता और क्षमा का गुण सबसे बड़ा गुण है, सभी की विशेषताओं को देखना है और उन्हें आगे बढ़ाना है ।

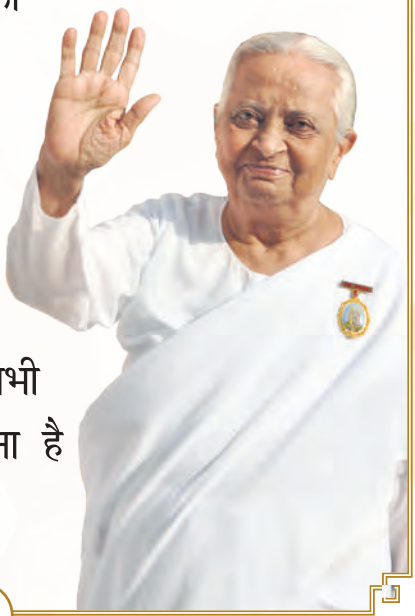

स्नेहांजलि

- यज्ञ की आदि रत्नों में विशेष रत्न दादी ईशु जी जिन्हें स्वयं भगवान ने अपने सारे खजाने का पूंजीपति बनाया...ऐसी सर्व खजानों की खजांची दादी माँ को शत् शत् नमन् ।
- सर्व की मनोकामनाएं पूर्ण करने की शक्ति थीं उनमें, उनके वरदानी बोल ऐसे सिद्धि स्वरूप थे जो कभी व्यर्थ न जाते थे... ऐसी कामधेनु माँ को शत् शत् नमन् ।
- एक बाबा दूसरा न कोई, एक बल, एक भरोसा, सदा एक की ही लगन में सदा मगन रहने वाली एकव्रता, तयाग-तपस्या, सच्चाई-सफाई की प्रतिमूर्ति दादी माँ को शत् शत् नमन् ।
- हमेशा हाँ जी का पार्ट बजाकर सर्व के सामने उदाहरणमूर्त बनने वाली सदा आज्ञाकारी, वफादार और फरमानबरदार दादी माँ को बारंबार नमन् ।
- भगवान ने अपना राइट हैंड बनाकर सदा जिम्मेदारियों का ताज सौंपा, आपकी वफा के आगे तो स्वयं भगवान

भी कुर्बान हो गए ऐसी सर्व की विश्वसनीय, ट्रस्टी, निर्मानचित्त दादी माँ को शत् शत् नमन ।

- जिसने हमको सिखाया निष्ठा पूर्वक यज्ञ के प्रति सम्मान, ऐसी यज्ञ की आदिरत्न दादी जी आपको शत-शत प्रणाम ।
- हम दादी जी को याद करके दिल से अर्पित करते भावांजलि ।
- उनकी विशेषताओं को जीवन में धारण करना ही होगी सच्ची श्रद्धांजलि ।

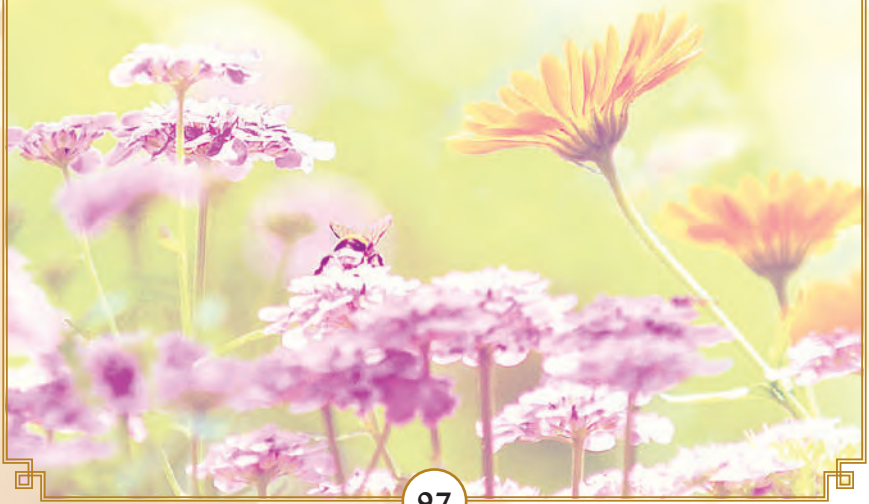





मधुबन महातीर्थ की सुनहरी यादों में
आप झलकती हो, जब भी साकार बाबा को देखते,
तो आप भी यहीं सामने खड़ी दिखायी पड़ती हो।
मधुबन पावन भूमि जब-जब आपको याद करती है,
इसके दिल में आप ही धड़कती हो।